अगस्त के मुख्य कृषि कार्य

राजीव कुमार सिंह*, कपिला शेखावत*, प्रवीण कुमार उपाध्याय*, एस.एस. राठौर* और **चप्पली हरेंद्र***

"अगस्त माह, जिसे आप श्रावण-भाद्रपद भी कहते हैं, खरीफ फसलों की अच्छी पैदावार के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। देश में कृषि, सदियों से गांवों में बसे हुये लोगों के जीवन निर्वाह का सहारा तथा परम्परागत व्यवसाय रहा है। यह न केवल देश की दो-तिहाई जनसंख्या की आजीविका सुरक्षा पद्धति की मेरुदण्ड ही है, बल्कि उनकी आर्थिकी, व्यापारिकी एवं सामाजिक प्रतिष्ठा की प्रतीक भी है। आज भारत कृषि उत्पादन में विश्व के शीर्ष पांच देशों में शामिल है। हम चावल, गेहूं, सब्जियां व फल, मछली, अण्डे, दुग्ध और दलहन के बड़े उत्पादक तथा कृषि उत्पाद के निर्यातक भी हैं। इस विकास के बावजूद, वर्तमान में कृषि पर निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या, जलवायु परिवर्तन और इससे जुड़े खतरे, प्राकृतिक संसाधनों की क्षीण होती उपलब्धता, मजदूरी की समस्या, उत्पादन की बढ़ रही लागत, बाजार की अनिश्चितता, भोजन की खपत का बदल रहा स्वरूप और आय में अत्यधिक असमानता जैसे दबाव बढ़ गये हैं। देश के कृषि क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों को बनाये रखने के लिए न केवल नवोन्मेषी तकनीकियां विकसित करने की आवश्यकता है, बल्कि इन तकनीकियों को कृषक समुदाय में स्थानांतरित करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। कृषि समृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए अत्याधुनिक तकनीकियों के विकास और स्थानांतरण में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों एवं कृषि विश्वविद्यालयों की प्रमुख भूमिका सर्वज्ञात है। देशभर में कृषि तकनीकियों के स्थानांतरण के लिए अनेक नवोन्मेषी प्रसार क्रियाविधियों को भी विकसित किया गया है। समय की मांग यह है कि किसानों में इन नई तकनीकियों में तेजी से प्रसार लाने के लिए प्रणालियों की दक्षता को बढ़ाया जाए। सूचना का प्रभावी प्रवाह और तकनीक समर्थन की उपलब्धता अत्यधिक अनिवार्य है।"

धान, मक्का, ज्वार, बाजरा आदि खरीफ फसलों की खेती का खाद्यान्न उत्पादन में काफी योगदान है और ये सभी फसलें मानसून के आगमन पर निर्भर करती हैं। अत: हमें सघन खेती के लिए उच्च उत्पादकता एवं लाभ हेतु उन्नत कृषि तकनीकियों के अलावा बारानी खेती में मक्का, ज्वार, बाजरा, अरहर, मूंग, उड़द, ग्वार, मोठ, तिल आदि का उचित प्रबंधन करना बहुत ही आवश्यक है। इस लेख में खरीफ फसलों जैसे-धान, ज्वार, बाजरा, मक्का, अरहर, मूंग, उड़द, मूंगफली, तिल, सोयाबीन, सूरजमुखी, कपास, गन्ना, चारा, और सब्जी फसलें जैसे भिंडी बैंगन, परवल, कद्दूवर्गीय, टमाटर, हरी प्याज, गाजर, बेबीकॉर्न, मिर्च, ग्वार, पालक, अगेती मूली, फूलगोभी, और बंदगोभी आदि की उत्पादन आधारित आधुनिक तकनीकियों एवं उन्नत सस्य विधियों) जैसे सामयिक विषयों को सम्मिलित किया गया है। इस समय बागवानी व पुष्प वाली फसलें जैसे-आम, अमरूद, कटहल, आंवला, पपीता,

*सस्य विज्ञान संभाग, भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली-110012

केला, नीबू, बेर, जामुन, लीची एवं गुलाब, रजनीगंधा, ग्लेडियोलस का उन्नत सस्य प्रबंधन ही खड़ी फसल के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान कर फसल की उच्च उत्पादकता एवं लाभ को सुनिश्चित करता है।

धान

धान की फसल के लिए सिंचाई की पर्याप्त सुविधा का होना बहुत ही आवश्यक है, क्योंकि इस फसल को खाद्यान्न फसलों में सबसे अधिक पानी की आवश्यकता होती है। इस फसल की कुछ विशेष अवस्थाओं में जैसे-रोपाई के बाद एक सप्ताह तक, कल्ले फूटते समय, फूल निकलते समय, बाली निकलते समय तथा दाना भरते समय खेत में 5-6 सें.मी. पानी खड़ा रहना अति लाभकारी होता है। फूल खिलने की अवस्था पानी के लिए अति संवेदनशील है। अनुसंधान के आधार पर यह पाया गया है कि धान की अधिक उपज लेने के लिए लगातार पानी भरा रहना आवश्यक नहीं है। इसके लिए खेत की सतह से पानी अदृश्य होने के एक दिन बाद 5-7 सें.मी. सिंचाई करना उपयुक्त होता है। यदि वर्षा के अभाव के कारण पानी की कमी दिखाई दे तो सिंचाई अवश्य करें। खेत में पानी रहने से फॉस्फोरस, मैंगनीज तथा लोहा पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ जाती है और खरपतवार भी कम निकलते हैं। यह भी ध्यान देने योग्य है कि कल्ले निकलते समय 5 सें.मी. से ज्यादा पानी अधिक समय तक धान के खेत में भरा रहना भी हानिकारक होता है। अत: जिन क्षेत्रों में पानी भरा रहता हो वहां जल निकासी का प्रबंध करना बहुत आवश्यक है।

धान की नई प्रजाति पूसा बासमती-1847

- कुछ विशेष परिस्थितियों के कारण धान की रोपाई देर से की जा सकती है। कई बार ऐसा देखा गया है कि वर्षा बहुत अधिक हो जाती है या वर्षा का आगमन देर से होता है। ऐसी परिस्थितियों में जलभराव के कारण समय पर रोपाई सम्भव नहीं हो पाती है। उपरोक्त दशा में कुछ विशेष सस्य क्रियाओं को अपनाया जाये तो पुरानी पौध के प्रयोग से धान की अच्छी पैदावार प्राप्त की जा सकती है। रोपाई की दूरी घटा देनी चाहिए, जिससे प्रति इकाई पौधों की संख्या बढ़ जाये। ऐसी दशा में धान की रोपाई के लिए पंक्ति से पंक्ति एवं पौधे से पौधे को 20×10 एवं 15×10 सें.मी. की दूरी पर लगायें और प्रति स्थान पर 3-5 पौधों की रोपाई करें। धान की देर से पकने वाली प्रजातियों की रोपाई इस माह बंद कर दें।
- खेतों की मजबूत मेड़बन्दी करें, ताकि वर्षा का पानी खेत से बाहर न निकलने पाए। पछेती प्रजाति के रोपाई वाले खेतों में जिस जगहों पर पौधे मर गये हों, वहां उसी प्रजाति के नये पौधे की दोबारा रोपाई करें और खेत में पानी का लेवल 3-4 सें.मी. बनाएं रखें।

सारणी 1. धान की फसल में रसायनों द्वारा खरपतवार नियंत्रण

रसायन	मात्रा (ग्राम/हैक्टर)	पानी की मात्रा (लीटर/हैक्टर)	प्रयोग का समय	नियंत्रित खरपतवार
पायरोजोसल्फ्यूरॉन ईथाईल 10 डब्ल्यू.पी.	200	500-600	रोपाई या बुआई के 15-25 दिनों बाद	घास एवं चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार
पेन्डीमेथेलिन	1000-1500	500-600	रोपाई या बुआई के 3-4 दिनों बाद	घास, मोथा एवं चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार
प्रेटीलाक्लोर	500-1000	500-600	रोपाई या बुआई के 3-4 दिनों बाद	घास, मोथा एवं चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार
ब्यूटाक्लोर	1500-2000	500-600	रोपाई या बुआई के 3-4 दिनों बाद	घास कुल के खरपतवार
एनिलोफॉस	500-600	500-600	रोपाई या बुआई के 3-4 दिनों बाद	घास एवं मोथा कुल के खरपतवार
बैंथियोकार्ब	1000-1500	500-600	रोपाई या बुआई के 3-4 दिनों बाद	घास कुल के खरपतवार
ऑक्सीडायजान	750-1000	500-600	रोपाई या बुआई के 3-4 दिनों बाद	घास, मोथा एवं चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार
ऑक्सीफ्लोरफेन	150-250	500-600	रोपाई या बुआई के 3-4 दिनों बाद	घास, मोथा एवं चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार
बिस्पाइरीबैक सोडियम (नोमिनी गोल्ड)	20-30	500-600	रोपाई या बुआई के 15-25 दिनों बाद	घास कुल के मोथा तथा पत्ते वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिये
क्लोरिम्यूरॉन +मैटसल्फ्यूरॉन	20	500-600	रोपाई या बुआई के 25-30 दिनों बाद	चौड़ी पत्ती वाले एवं मोथा कुल के खरपतवार
फेनोक्साप्रोप-पी-इथाईल (राइस स्टार)	60-70	500-600	रोपाई या बुआई के 20-25 दिनों बाद	सकरी पत्ती वाले खरपतवार के नियंत्रण में प्रभावी
इथॉक्सिसल्फ्यूरॉन 15 प्रतिशत डब्ल्यू.डी.जी.	100	500-600	-	मोथा खरपतवार

सारणी 2. धान के रोग एवं रोकथाम

कीट	पौधे के प्रभावित भाग एवं लक्षण	दवा की मात्रा प्रति हैक्टर
धान की फसल में जीवाणु पर्ण अंगमारी रोग	यह रोग जीवाणु के द्वारा होता है। पौधों की छोटी अवस्था से लेकर परिपक्व अवस्था तक यह रोग कभी भी हो सकता है। इस रोग में पत्तियों के किनारे ऊपरी भाग से शुरू होकर मध्य भाग तक सूखने लगते हैं। सूखे पीले पत्तों के साथ-साथ राख के रंग के चकत्ते भी दिखाई देते हैं। पत्तों पर जीवाणु के रिसाव से छोटी-छोटी बूंदें नजर आती हैं तथा पौधों में शिथिलता आ जाती है। अंततः बालियां दानारहित रह जाती हैं।	• इस रोग की अवस्था में नाइट्रोजन का प्रयोग कम कर दें • जिस खेत में रोग लगा हो, उसका पानी दूसरे खेत में न जाने दें। इससे रोग के फैलने की आशंका होती है। • खेत में रोग को फैलने से रोकने के लिए खेत से समुचित जल निकास की व्यवस्था की जाए, तो रोग को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। • रोग के नियंत्रण के लिए 74 ग्राम एग्रीमाइसीन-100 और 500 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (फाइटोलान/ब्लाइटॉक्स-50/क्यूप्राविट) को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से तीन-चार बार छिड़काव करें। पहला छिड़काव रोग प्रकट होने पर तथा आवश्यकतानुसार 10 दिनों के अन्तराल पर करें। • नियंत्रण हेतु 15 ग्राम स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट (90 प्रतिशत) या 15 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन या टेट्रासाक्लिन हाइड्रोक्लोराइड 10 प्रतिशत को 500 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी.) के साथ मिलाकर प्रति हैक्टर 500-750 लीटर पानी में घोल बनाकर 10-12 दिनों के अंतराल पर 2-3 छिड़काव करना चाहिए। • फसलों में इस रोग से बचाव में रोग प्रतिरोधी प्रजातियों जैसे अजय, आईआर-42, आईआर-64 तथा स्वर्णा इत्यादि की खेती काफी सर्वोत्तम तरीका है।
पर्ण झुलसा (शीथ ब्लाइट)	यह रोग फफूंद द्वारा होता है। इसमें पत्ती की छाल पर 2-3 सें.मी. लम्बे हरे से भूरे रंग के घब्बे पड़ते हैं, जोकि बाद में चलकर भूसे के रंग के हो जाते हैं। धब्बों के चारों तरफ बैंगनी रंग की पतली धारी बन जाती है।	• ट्राइकोडर्मा विरडी 1 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 5-10 ग्राम प्रति लीटर पानी (2.5 कि.ग्रा.) 500 लीटर पानी में घोलकर पर्णीय छिड़काव। • नियंत्रण के लिए कार्बेन्डाजिम (50 प्रतिशत डब्ल्यूपी) 500 ग्राम या थायोफिनेट मिथाइल (70 प्रतिशत डब्ल्यू.पी.) 1.0 कि.ग्रा. कार्बेन्डाजिम (50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी.) 500 ग्राम या कार्बेन्डाजिम (12 प्रतिशत) + मैंकोजेब (63 प्रतिशत डब्ल्यू.पी.) 750 ग्राम या प्रोपिकोनाजोल (25 प्रतिशत ई.सी.) 500 मि.ली. या हैक्साकोनाजोल (5.0 प्रतिशत ई.सी.) 1.0 लीटर दवा 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से पर्णीय छिड़काव करें। • रोगरोधी किस्में-कृष्णा सी.आर. 44-11 साकेत-1, पंकज, मानसरोवर आदि
धान की फसल में पत्ती का झुलसा रोग	पौधे की छोटी अवस्था से लेकर परिपक्व अवस्था तक यह रोग कभी भी हो सकता है। पत्तियों में किनारे ऊपरी भाग से शुरू होकर मध्य भाग तक सूखने लगते हैं। सूखे पीले पत्ते के साथ-साथ राख के रंग के चकत्ते भी दिखाई देते हैं। बालियां दानारहित रह जाती हैं।	• नियंत्रण के लिये 74 ग्राम एग्रीमाइसीन-100 और 500 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (फाइटोलान)/ब्लाइटॉक्स-50/क्यूप्राविट को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर/हैक्टर की दर से 3-4 बार 10 दिनों के अन्तराल से छिड़काव करें। • स्ट्रेप्टोमाइसीन/एग्रामाइसीन से बीज को उपचारित करके बोयें। • इस रोग को लगने पर नाइट्रोजन की मात्रा कम कर देनी चाहिए।
धान की फसल में ब्लास्ट या झोंका रोग	यह रोग फफूंद से फैलता है। पौधे के सभी भाग इस रोग से प्रभावित होते हैं। इस रोग में पत्तियों पर भूरे घब्बे, कत्थई रंग एवं बीच वाला भाग राख के रंग का हो जाता है। इसके फलस्वरूप बाली आधार से मुड़कर लटक जाती है एवं दाने का भराव भी पूरा नहीं हो पाता है।	• जुलाई के प्रथम पखवाड़े में रोपाई पूरी कर लें। देर से रोपाई करने पर झोंका रोग के लगने की आशंका बढ़ जाती है। • बीज का कार्बेन्डाजिम एवं थीरम (1:1) 3 ग्राम/कि.ग्रा. या फंगोरीन 6 ग्राम/कि.ग्रा. की दर से बीजोपचार करना चाहिए। • नियंत्रण के लिए कार्बेन्डाजिम (50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी.) 500 ग्राम या 500 ग्राम ट्राइसायक्लेजोल या एडीफेनफॉस (50 प्रतिशत ई.सी.) 500 मि.ली. या हेक्साकोनाजोल (5.0 प्रतिशत ई.सी.) 1.0 लीटर या मैंकोजेब (75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी.) 2.0 कि.ग्रा. या जिनेब (75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी.) 2.0 कि.ग्रा. या कार्बेन्डाजिम (12 प्रतिशत) + मैंकोजेब (63 प्रतिशत डब्ल्यू.पी.) 750 ग्राम या आइसोप्रोथपलीन (40 प्रतिशत ई.सी.) 750 मि.ली. या कासूगामाइसिन (3 प्रतिशत एम.एल.) 1.15 लीटर दवा 500-750 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। • कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दूसरा छिड़काव कल्ले फूटते समय, तीसरा छिड़काव बालियां निकलते समय ग्रीवा संक्रमण रोकने के लिए करना चाहिए।

ज्वार, बाजरा और मक्का

- बाजरा की बुआई इस माह के प्रथम पखवाड़े तक पूरी कर लें। बुआई के 15-20 दिनों बाद विरलीकरण करके कमजोर पौधों को निकालकर पंक्ति में पौधों की आपस की दूरी 10-15 सें.मी. कर लेनी चाहिए। संकर/उन्नत प्रजातियों में 85-108 कि.ग्रा. यूरिया की टॉप ड्रेसिंग/हैक्टर की दर से करें। बाजरे की फसल में फूल आने की स्थिति में सिंचाई करना लाभप्रद होता है। वर्षा न होने की स्थिति में 2-3 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है। पौधों में फुटान होते समय, बालियां निकलते समय तथा दाना बनते समय नमी की कमी नहीं होनी चाहिए। बाजरा जल प्लावन से भी प्रभावित होता है। अत: ध्यान रहे कि खेत में पानी इकट्ठा न होने पाये। खरपतवार नियंत्रण के लिए 1.0 कि.ग्रा. एट्राजिन/हैक्टर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव बुआई के बाद तथा अंकुरण से पूर्व करते हैं। इसके साथ-साथ 20-40 दिनों के अन्दर एक बार कसौला या खुरपी से खरपतवार निकाल दें।
- तनाछेदक कीट से बचाव के लिए कार्बेरिल का 2.5 मि.ली. दवा का घोल प्रति लीटर 500 लीटर पानी में मिलाकर या लिन्डेन 6 प्रतिशत ग्रेन्यूल अथवा कार्बोफ्यूरॉन 3 प्रतिशत ग्रेन्यूल 20 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से छिड़काव करें। 8 ट्राइकोकार्ड प्रति हैक्टर लगाने से भी इसकी रोकथाम की जा सकती है।

ज्वार

- ज्वार की फसल में पौधों की वृद्धि, फूल तथा दाना बनते समय सिंचाई करना आवश्यक होता है। ज्वार की फसल के लिए सिंचाई देने की चार क्रान्तिक अवस्थाएं हैं-प्रारंभिक बीज पौधे की अवस्था, भुट्टे निकलने से पहले, भुट्टे निकलते समय व भुट्टों में दाना बनने की अवस्थायें। ज्वार की अच्छी उपज लेने के लिए बुआई के 3 सप्ताह बाद निराई-गुड़ाई करने से खरपतवार नियंत्रण के साथ-साथ भूमि में वायु का संचार होता है तथा भूमि में नमी भी सुरक्षित रहती है। यदि किसी कारणवश निराई-गुड़ाई संभव न हो, तो बुआई के तुरंत बाद एट्राजिन नामक खरपतवारनाशी का 0.75-1.0 कि.ग्रा. 700-800 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

- दाने के लिए ज्वार की फसल में विरलीकरण (थिनिंग) करके पंक्तियों में पौधे से पौधे की दूरी 15-20 सें.मी. अवश्य कर दें। विरलीकरण का कार्य करने के बाद उन्नत/संकर प्रजातियों में 50 कि.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हैक्टर की दर से टॉप ड्रेसिंग बुआई के 30-35 दिनों बाद खड़ी फसल में करें। असिंचित दशा में 2 प्रतिशत यूरिया का 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर खड़ी फसल में छिड़काव करना अत्यंत लाभप्रद पाया गया है।
- तना मक्खी ज्वार का एक प्रमुख कीट है। इसका प्रकोप पौधों की जमाव के लगभग 7 से 30 दिनों तक होता है। कीट की इल्लियां उगते हुए पौधों की गोफ को काट देती हैं, जिससे शुरू की अवस्था में ही पौधे सूख जाते हैं। इसके नियंत्रण के लिए फोरेट 10 जी या कार्बोफ्यूरॉन 3 जी बुआई के समय 20 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से कूंड़ों में डालना चाहिए।

- **प्रमुख कीट एवं उनकी रोकथाम:** धान की फसल में सबसे अधिक कीट नुकसान पहुंचाते हैं। धान में कीटों के प्रकोप से उपज के साथ-साथ गुणवत्ता में भी ह्रास होता है। इसमें चावल की मांग स्थानीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में काफी घट जाती है। इसके परिणामस्वरूप किसानों को भी भारी आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ता है। इसका विवरण सारणी-3 में दिया गया है।
- मक्का में बुआई के 40-45 दिनों बाद 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हैक्टर की दर से दूसरी व अन्तिम टॉप ड्रेसिंग नमी होने पर नर मंजरी निकलते समय करनी चाहिए। मक्का में बाली बनते समय पर्याप्त नमी होनी चाहिए, अन्यथा उपज 50 प्रतिशत तक कम हो जाती है।
- सामान्यत: यदि वर्षा की कमी हो, तो क्रांतिक अवस्थाओं (घुटने तक की ऊंचाई वाली अवस्था, झंडे निकलने

संकर बाजरा

संकर मक्का

वाली अवस्था, दाना बनने की अवस्था) पर एक या दो सिंचाइयां कर देनी चाहिए, जिससे उपज में गिरावट न हो। सिंचाई के साथ-साथ मक्का में जल निकास भी अत्यंत आवश्यक है। यदि मक्का मेड़ों पर बोई गई है, तो खेत के अंत में जल निकास का समुचित प्रबंध होना चाहिए।

- खरीफ के मौसम में खरपतवारों का प्रकोप ज्यादा होता है, जिससे 50-60 प्रतिशत उपज में गिरावट आ सकती है। इसलिए मक्का के खेत को शुरू के 45 दिनों तक खरपतवारमुक्त रखना चाहिए। खरपतवारों के प्रबंधन के लिए 2-3 निराई-गुड़ाई खुरपी या हैंड-हो या हस्तचालित अथवा शक्तिचालित यंत्रों से करके खरपतवारों को नष्ट करने से मृदा में पड़ने वाली पपड़ी भी टूट जाती है। इससे पौधों की जड़ों को अच्छे वायु संचार से बढ़वार में मदद मिलती है। खरपतवारों के रासायनिक नियंत्रण के लिए एट्राजिन की 1-1.5 कि.ग्रा./हैक्टर मात्रा का छिड़काव किया जा सकता है। एट्राजिन की आवश्यक मात्रा का 800 लीटर पानी में घोल बनाकर बुआई के बाद परंतु जमाव से पहले छिड़क देना चाहिए।
- मक्का में मेडिस, टर्सिकम लीफ ब्लाइट, डाउनी मिल्ड्यू इत्यादि रोगों कभी-कभी दिखाई देते हैं। इन रोगों का प्रकोप देर से बोई जाने वाली फसल में ज्यादा पाया जाता है। जीवाणुजनित तना विगलन तथा पाइथियम वृंत गलन रोग पौधों में पुष्पण के दौरान जलभराव की स्थिति में पाया जाता है। इसी प्रकार, फसल की बढ़वार के समय पुष्पणोत्तर अवस्था में कमी के दबाव के कारण पुष्पणोत्तर वृंत गलन के लक्षण भी दिखाई देते हैं। इस प्रकार के रोगों को रोकने के लिए रोगरोधी प्रजातियों की समय से बुआई करनी चाहिए, जबकि मेडिस, टर्सिकम लीफ ब्लाइट की रोकथाम के लिए 2.5 कि.ग्रा./हैक्टर जिनेब को 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। यदि रोग की रोकथाम न हो तो 10-15 दिनों के अंतराल पर दूसरा छिड़काव अवश्य कर देना चाहिए। मक्का की फसल में पत्ती लपेटक कीट की रोकथाम के लिए क्लोरोपायरीफॉस 1.0 मि.ली. पानी में मिलाकर या इमानेकटिन बेंजोएट 1.0 मि.ली. दवा 4.0 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- मंडुआ, झंगोरा, रामदाना, कूटू मंडुआ की फसल में तनाछेदक कीट का प्रकोप होता है। इसके नियंत्रण के लिये क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी की 20 मि.ली. दवा प्रति नाली की दर से 15-20 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मूंगफली, तिल, सोयाबीन और सूरजमुखी

- मूंगफली की फसल में बुआई के 35-40 दिन पुष्पावस्था से पेगिंग के होते हैं। इस समय पानी की कमी होने पर मूंगफली की उत्पादकता काफी कम हो जाती है। इसलिए इस समय यदि वर्षा नहीं होती है, तो सिंचाई की व्यवस्था करनी चाहिए। इस समय यदि पेगिंग हो गयी है, तो पौधों के चारों ओर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करने से फली का विकास अच्छा होता है और पैदावार में भी बढ़ोतरी होती है। इस समय सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे बोरॉन की कमी दिखने पर 0.2 प्रतिशत बोरेक्स के घोल का प्रयोग करें। इसी प्रकार जिंक की कमी होने पर 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट और 0.25 प्रतिशत चूने का प्रयोग करना चाहिए। मूंगफली फसल बोने के 40 दिनों बाद इंडोल एसिटिक एसिड 0.7 ग्राम को एल्कोहल (7 मि.ली.) में घोलें तथा 100 लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करें। फिर एक सप्ताह बाद 6 मि.ली. इथराल (40 प्रतिशत) 100 लीटर पानी में घोलकर छिड़कने से मूंगफली की पैदावार 17-27 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। कॉलर रॉट रोग से मूंगफली की रोकथाम के लिए फफूंदीनाशक कार्बेन्डाजिम

मूंगफली

अरहर, मूंग व उड़द

- इस समय अरहर की फसल में उकठा रोग, फाइटोफ्थोरा, अंगमारी व पादप बांझ रोग की रोकथाम के लिए 2.5 मि.ली. डाइकोफॉल दवा 1.0 लीटर पानी में घोलकर एवं 1.7 मि.ली. डाइमेथोएट दवा 1 लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिड़काव करें। जिस खेत में उकठा रोग का प्रकोप अधिक हो उस खेत में 3 से 4 वर्षों तक अरहर की फसल नहीं लेनी चाहिए। अरहर के साथ ज्वार की सहफसल लेने से किसी हद तक उकठा रोग का प्रकोप कम हो जाता है। ट्राइकोडर्मा 4 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज को उपचारित करना चाहिए। इन दलहनी फसलों में फलीछेदक कीट का प्रकोप भी इसी महीने आता है। इसके लिए जब 70 प्रतिशत फलियां पक जाएं तो मोनोक्रोटोफॉस 36 एसएल को 300 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। जरूरत पड़ने पर 15 दिनों बाद फिर छिड़काव कर सकते हैं।

- मूंग की खेती के लिए दोमट तथा हल्की दोमट मृदा, जिसमें पानी का समुचित निकास हो, इस फसल के लिए उत्तम है। मूंग एवं उड़द की कम समय में पकने वाली प्रजातियों की बुआई जुलाई के अन्तिम सप्ताह से अगस्त के तीसरे सप्ताह तक करनी चाहिए। बुआई कूंड़ में हल के पीछे करें। कूंड़ से कूंड़ की दूरी 30-35 सें.मी. एवं उड़द के लिए कूंड़ से कूंड़ की दूरी 30-45 सें.मी. रखनी चाहिए। बुआई के बाद तीसरे सप्ताह में घने पौधों को निकालकर पौधे की दूरी 10 सें.मी. कर देनी चाहिए।
- मूंग की फसल में पीला मोजैक रोग का अधिक प्रकोप होने के कारण इसकी औसत उपज बहुत कम प्राप्त होती है। मूंग एवं उड़द की शीघ्र पकने वाली उन्नत प्रजातियों की बुआई करें। इसके लिये **मूंग की** प्रजातियां जैसे-सम्राट, पी.डी.एम-54, पीडीएम-11, नरेन्द्र मूंग-1, पन्त मूंग-1, पन्त मूंग-2, पन्त मूंग-3, पन्त मूंग-4, पन्त मूंग-5 मालवीय ज्योति, मालवीय जनचेतना, मालवीय जनप्रिया, मालवीय जागृति, आशा, मालवीय जन कल्याणी, एमएच 215, आईपीएम-23, श्वेता एवं **उड़द की** प्रजाति जैसे-पन्त उड़द-35, पन्त उड़द 31, पंत उड़द-19, पन्त उड़द-40, नरेन्द्र उड़द-1, शेखर 1, शेखर 2, शेखर 3, उत्तरा (आईपीयू-94-1) आदि की बुआई कर सकते हैं।

- मृदा की जांच नहीं करवाई गई है, तो 10-15 कि.ग्रा. नाइट्रोजन तथा 40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस प्रति हैक्टर की दर से बुआई के समय कूंड़ों में डालना चाहिए। मूंग, उड़द, लोबिया व अरहर-इस प्रकार की दलहनी फसलों में फूल आने पर मृदा में हल्की नमी बनाये रखें। इससे फूल झड़ेंगे नहीं तथा अधिक फलियां लगेंगी व दाने भी मोटे और स्वस्थ होंगे, परंतु खेतों में वर्षा का पानी खड़ा नहीं होना चाहिए तथा जल निकास अच्छा होना चाहिए।
- बुआई के प्रारंभिक 4-5 सप्ताह तक खरपतवार की समस्या अधिक रहती है। पहली सिंचाई के बाद निराई करने से खरपतवार नष्ट होने के साथ-साथ भूमि में वायु का संचार भी होता है, जो मूल ग्रन्थियों में क्रियाशील जीवाणुओं द्वारा वायुमण्डलीय नाइट्रोजन एकत्रित करने में सहायक होता है। खरपतवारों के रासायनिक नियंत्रण हेतु 2.5-3.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर बुआई के 2 से 3 दिनों के अन्दर अंकुरण के पूर्व छिड़काव करने से 4-6 सप्ताह तक खरपतवार नहीं निकलते हैं। चौड़ी पत्ती तथा घास वाले खरपतवार को रासायनिक विधि से नष्ट करने के लिये पेन्डीमेथिलीन (30 ई.सी.) 3.30 लीटर या एलाक्लोर 4.0 लीटर या फ्लूक्लोरोलिन (45 ई.सी.) नामक रसायन की 2.20 लीटर मात्रा को 800 लीटर पानी में मिलाकर बुआई के तुरन्त बाद या अंकुरण से पहले छिड़काव कर देना चाहिए। अत: बुआई के 15-20 दिनों के अन्दर कसोले से निराई-गुड़ाई कर खरपतवारों को नष्ट कर देना चाहिए।

- अरहर, मूंग एवं उड़द की फसल में पीला मोजैक की रोकथाम के लिए डाइमोथेएट (30 ई.सी.) 1.0 लीटर या मिथाइल-ओंडिमिटान (25 ई.सी.) 1.0 लीटर मात्रा को 600-800 लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10-15 दिनों के अन्तराल पर 2-3 छिड़काव करें या इमिडाक्लोरोप्रिड 0.5 मि.ली./लीटर पानी 500 लीटर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

या मैंकोजेब का प्रयोग करना चाहिए। मूंगफली में टिक्का रोग की रोकथाम के लिए खड़ी फसल पर जिंक मैंग्नीज कार्बामेट 2.0 कि.ग्रा. या जिनेब 75 प्रतिशत की 2.5 कि.ग्रा. दवा को प्रति हैक्टर की दर से 1000 लीटर पानी में घोलकर 10 दिनों के अन्तराल पर 2-3 छिड़काव करें।

- खरीफ मौसम की फसल के लिए जून के अंतिम सप्ताह से लेकर जुलाई के प्रथम सप्ताह को तिल की अधिक उपज के लिए उपयुक्त पाया गया है। अगस्त में मानसून में देरी होने या खेत खाली होने की दशा में तिल की अल्पावधि की प्रजातियों की बुआई कर सकते हैं। खरीफ की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। ध्यान रहे तिल में पुष्पण एवं फली में बीज भरने की अवस्था में मृदा में नमी की कमी न हो। इन अवस्थाओं पर नमी की कमी होने पर फसल की सिंचाई अवश्य करें। खरीफ के मौसम में आवश्यकतानुसार अधिक जल की निकासी अथवा नमी संरक्षण के उचित उपाय करें। सामान्यत: दो निराई-गुड़ाई करने से खरपतवारों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। पहली निराई-गुड़ाई फसल बोने के 15-20 दिनों के अन्दर एवं दूसरी निराई-गुड़ाई बुआई के 35-40 दिनों के अन्दर करनी चाहिए। दूसरी निराई-गुड़ाई पर नाइट्रोजन की शेष मात्रा का भी प्रयोग करें। निराई-गुड़ाई के लिए श्रमिकों की कमी होने पर, तिल में 1.0 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से फ्लूक्लोरेलिन सक्रिय दवा को 400-500 लीटर पानी में घोलकर बुआई से पहले खेत में छिड़कने से भी खरपतवारों को नष्ट किया जा सकता है। एलाक्लोर (1.75 कि.ग्रा.) या पेन्डीमेथिलीन (1 कि.ग्रा.) के प्रयोग से भी खरपतवारों पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

सोयाबीन

- **फाइलोडी:** यह रोग माइक्रो प्लाज्मा द्वारा होता है। इस रोग में पौधों का पुष्प विन्यास पत्तियों के विकृत रूप में बदलकर गुच्छेदार हो जाता है। इस रोग का वाहक फुदका कीट है। इसकी रोकथाम के लिए तिल की बुआई समय से पहले न की जाये। बुआई के समय कूंड़ में फोरेट 10 जी. 15 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से प्रयोग किया जाये। मिथाइल-ओ-डिमेटान 25 ईसी 1.0 लीटर/हैक्टर की दर से छिड़काव करना चाहिए।
- सोयाबीन की फसल में खरपतवार को रासायनिक विधि से नष्ट करने के लिये इमेजीक्राइपर (10 ई.सी.) 750-1000 मि.ली. मात्रा प्रति हैक्टर को 500-600 लीटर पानी में मिलाकर बुआई के 10-20 दिनों बाद छिड़काव करें। क्विजैलोफोप-9-टरफ्लूराइल (4.4 ई.सी.) पेन्टारा 750-1000 मि.ली. या फिनाक्साप्रोन (10 ई.सी.) व्हिप सुपर 800-1000 मि.ली. मात्रा प्रति हैक्टर को 500-600 लीटर पानी में मिलाकर बुआई के 20-25 दिनों बाद छिड़काव करें। अत: बुआई के 20-25 दिनों के अन्दर कसोले से निराई-गुड़ाई कर खरपतवारों को नष्ट कर देना चाहिए।
- सोयाबीन और तिल में भी खरपतवार नियंत्रण के साथ-साथ होने वाले प्रमुख रोगों और कीटों को नष्ट करने के लिए उपाय करने चाहिए। सोयाबीन की फसल पर पीला मोजैक रोग का विशेष प्रभाव पड़ता है। यह रोग वायरस द्वारा फैलता है, जिसे सफेद मक्खी फैलाती है। प्रभावित पौधों की पत्ती पीली और चित्तीदार दिखाई देती है। इसकी रोकथाम के लिए डाईमिथोएट (30 ई.सी.) या मिथाइल-ओ-डिमेटान (25 ई.सी.) की एक लीटर मात्रा को 800-1000 लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10-15 दिनों के अन्तराल पर 1-2 छिड़काव करें। रोगरोधी प्रजातियां जैसे-पीके-262, पीके-327, पीके-416, पीके-472, पीके-1024 पीएस-564 को बोयें। चितकबरा पीला धब्बा रोग के लिए कन्फीडोर की 250 मि.ली./हैक्टर 25 एवं 45 दिनों पर तथा पत्ती धब्बा रोग के लिए बाविस्टीन की 250 ग्राम दवा 600 लीटर पानी/हैक्टर की दर से छिड़काव करें। खेत में दीमक का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस (36 ई.सी.) 750 मि.ली. या क्लोरोपायरीफॉस (20 ई.सी.) 2.5 लीटर या क्यूनालफॉस (25 ई.सी.) 1.5 लीटर दवा को 600-800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव

सूरजमुखी

कपास

- अत्यधिक व असामयिक वर्षा के कारण सामान्यत: पौधों की ऊंचाई 1.5 मीटर से अधिक हो जाती है, जिससे उपज पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अतएव 1.5 मीटर से अधिक ऊंचाई वाली मुख्य तने की ऊपर वाली सभी शाखाओं की छंटाई सिकेटियर (कैंची) से कर देनी चाहिए। इस छंटाई से कीटनाशक रसायनों के छिड़काव में आसानी होती है।
- देसी कपास में अगस्त के पहले पखवाड़े में कपास से निकल रहे फुटाव को काट दें। इससे पैदावार बढ़ जाती है। फूल आने पर नेफ्थलीन एसीटिक एसिड 70 सी.सी. का छिड़काव अगस्त के अंत या सितम्बर के शुरू में करें। इस छिड़काव से फूल व टिण्डे सड़ते नहीं व पैदावार ज्यादा मिलती है।
- कपास में फूल आने के समय नाइट्रोजन की बाकी आधी मात्रा दें, जो कि संकर कपास में 1/2 बैग, अमेरिकन कपास में 2/3 बैग होती है। नाइट्रोजन देने से पहले खेत में नमी होनी चाहिए, परंतु पानी खड़ा नहीं होना चाहिए। वर्षा के बाद अतिरिक्त जल का निकास तुरंत होना चाहिए। यदि फूल आने पर खेत में नमी नहीं होगी, तो फूल और फल झड़ जाएंगे तथा पैदावार कम हो जायेगी। एक तिहाई टिण्डे खुलने पर आखिरी सिंचाई कर दें। इसके बाद कोई सिंचाई न करें तथा खेत में वर्षा का पानी खड़ा न होने दें।

- मूल-विगलन रोग में पौधों की जड़ सड़ जाती है और छाल के नीचे पीला सा पदार्थ जमा हो जाता है। इस रोग से बचने के लिए अगेती बुआई करनी चाहिए। वीटावैक्स 0.1 प्रतिशत और ब्लाइटॉक्स 0.3 प्रतिशत प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से बीज को उपचारित करना चाहिए।
- कपास के पत्ती लपेटने वाले कीट की इल्लियां पत्तियों को लपेटकर एक खोल सा बना लेती हैं और अन्दर पत्तियों को खाती हैं। इनकी रोकथाम के लिए (1) गर्मियों में गहरी जुताई करें, ताकि प्यूपा धूप से नष्ट हो जाएं, (2) इसके लार्वा को एकत्रित करके नष्ट कर देना चाहिए, (3) फसल पर पत्ती लपेटने वाले कीट दिखाई देने पर अण्डा पैरासिटोइड-ट्राइकोग्रामा 1.5 लाख प्रति हैक्टर की दर से खेत में प्रयोग करना चाहिए।
- रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग कीटों के आर्थिक कगार पर पहुंचने के बाद ही करें। अगस्त में कपास की फसल पर हरा तैला, रोयेंदार सूंडी, चित्तीदार सूंडी, कुबड़ा कीट तथा अन्य पत्ती खाने वाले कीट का प्रकोप बढ़ जाता है।
- हरा तैला कीट के शिशु व प्रौढ़ दोनों ही कपास को नुकसान पहुंचाते हैं। ये हरे रंग के होते हैं, जो कि पत्तियों की निचली सतह पर रहते हैं। ये टेढ़े चलते दिखाई देते हैं। इनके आक्रमण से पत्ते किनारों से पीले पड़ जाते हैं। नीचे की ओर मुड़ने लगते हैं, बाद में कपनुमा हो जाते हैं। पत्तियां पीली व लाल होकर सूख जाती है और जमीन पर गिर जाती हैं। पौधों की बढ़वार रुक जाती है व कलियां, फूल गिरने लगते हैं, जिससे पैदावार कम हो जाती है। हरा तैला जुलाई-अगस्त में सर्वाधिक हानि पहुंचाता है।
- सफेद मक्खी कीट का पिछले कुछ वर्षों से कपास में प्रकोप काफी बढ़ रहा है। यह एक बहुभक्षी कीट है, जो कपास की प्रारंभिक अवस्था से लेकर चुनाई व कटाई तक फसल में रहता है। इस कीट के शिशु और प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों की निचली सतह पर रहकर रस चूसते हैं। प्रौढ़ 1-1.5 मि.मी. लम्बे, सफेद पंखों व पीले शरीर वाले होते हैं। जबकि शिशु हल्के पीले, चपटे होते हैं। ये फसल को दो तरह से नुकसान पहुंचाते हैं। एक तो रस चूसने की वजह से, जिससे पौधा कमजोर हो जाता है। दूसरा पत्तियों पर चिपचिपा पदार्थ छोड़ने की वजह से, जिस पर काली फफूंद उग जाती है और पौधे के आहार बनाने की प्रक्रिया में बाधा डालती है। यदि अगस्त-सितम्बर माह में सफेद मक्खी कीट का आक्रमण हो जाए तो, सफेद मक्खी के आर्थिक कगार पर पहुंचने पर मैटासिस्टाक्स 25 ईसी व एक लीटर नीम आधारित कीटनाशक या 300 मि.ली. डाइमेथोएट 30 ईसी का बारी-बारी से 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

करें। यह रोग वायरस द्वारा फैलता है और इसे सफेद मक्खी फैलाती है। प्रभावित पौधों की पत्ती पीली और चित्तीदार दिखाई देती है।

- सूरजमुखी की फसल में बुआई के 15-20 दिनों बाद फालतू पौधे निकालकर पंक्तियों में पौधे से पौधे की दूरी 20 सें.मी. करें। बुआई के 25 दिनों बाद 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हैक्टर की दर से टॉप ड्रेसिंग करें। फसल की बुआई के 40-45 दिनों बाद दूसरी निराई-गुड़ाई के साथ पौधों पर 15-20 सें.मी. मिट्टी चढ़ा दें। बुआई के 20-25 दिनों बाद पहली सिंचाई के बाद निराई-गुड़ाई करना अति आवश्यक है। इससे खरपतवार भी नियंत्रित होते हैं एवं रसायनों द्वारा खरपतवार नियंत्रण हेतु पेन्डीमेथिलीन 30 ईसी की 3-3 लीटर मात्रा 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से बुआई के 2-3 दिनों के अन्दर छिड़काव करने से खरपतवारों का जमाव नहीं होता है। पहली सिंचाई बुआई के 20 से 25 दिनों बाद हल्की या स्प्रिंक्लर से करनी चाहिए। बाद में आवश्यकतानुसार 10 से 15 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए। कुल 5-6 सिंचाइयों की आवश्यकता पड़ती है। फूल निकलते समय और दाना भरते समय बहुत हल्की सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है और पौधे जमीन पर गिरने न पाएं। जब दाना पड़ जाता है, तो सूरजमुखी के फूल के द्वारा पौधे पर बहुत ही वजन आ जाता है, जिससे कि वह गिर सकता है।

गन्ना

- वर्षा न होने की स्थिति में 15 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करें। हल्की मृदा वाले क्षेत्र में फसल को गिरने से बचाने तथा कल्लों को देर से फूटने व निकलने से रोकने के लिए वर्षा प्रारम्भ होते ही पौधे की जड़ों पर अच्छी तरह मिट्टी चढ़ा देनी चाहिए। अगस्त में गन्ने को बांधें, ताकि फसल गिरने न पाए। फसल गिरने से उपज तथा गन्ने में शक्कर की मात्रा दोनों कम हो जाती हैं। अगस्त में पौध संरक्षण पर पूरा ध्यान दें, क्योंकि इस माह कीट व रोग लगने की काफी आशंका रहती है।
- अगस्त में गन्ने पर चढ़ने वाले खरपतवार यथा आइपोमिया प्रजाति (बेल) की बढ़वार होती है। इसे खेत से उखाड़कर फेंक दें अथवा मेट सल्फ्यूरॉन मिथाइल 4 ग्राम प्रति हैक्टर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर, जब इसमें छोटे पौधे खेत में दिखाई पड़े, प्रयोग करना चाहिये।
- **पायरिला कीट:** कीट का प्रकोप जुलाई से सितम्बर तक रहता है। इस कीट का सिरा लम्बा व चोंचनुमा होता है। इसके शिशु तथा वयस्क गन्ने की पत्ती से रस चूसकर क्षति पहुंचाते हैं। इस कीट के नियंत्रण के लिए अण्ड समूहों को निकालकर नष्ट कर देना चाहिए। फसल वातावरण में पायरिला कीट के परजीवी *एपीरिकेनिया मेलोनोल्यूका* को संरक्षण प्रदान करना चाहिए। परजीवी कीट की पर्याप्त उपस्थिति में कीट की स्वत: रोकथाम हो जाती है। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफॉस 25 ईसी 2.0 लीटर अथवा डाइक्लोरोवॉस 76 ईसी 375 मि.ली. अथवा क्लोरोपायरीफॉस 20 प्रतिशत ईसी 1.5 लीटर प्रति हैक्टर 600-800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।
- पत्ती के लाल धारी रोग का प्रकोप जून से सितम्बर से फसल के अन्त तक रहता है। गन्ने की पत्तियों पर लाल रंग की धारियां निचली सतह पर पड़ जाती हैं। इसके अत्यधिक प्रकोप की दशा में पूरी पत्ती लाल हो जाती है। पत्तियों का क्लोरोफिल समाप्त हो जाता है तथा बढ़वार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। लाल सड़न रोग का प्रकोप जुलाई से फसल के अन्त तक रहता है। ऊपर से तीसरी तथा चौथी पत्ती सूखने लगती है। इसके साथ ही पत्ती के बीच की मोटी नस में लाल या भूरे रंग के धब्बे पड़ने लगते हैं। गन्ने को बीच से चीरने पर गूदा मटमैला लाल दिखाई पड़ता है, जिसमें से सिरके जैसी गंध आती है। गन्ने की पिथ में सफेद अथवा भूरे रंग की फफूंदी भी विकसित हो जाती है। पत्ती के लाल धारी एवं लाल सड़न रोग की रोकथाम के लिए रोग प्रतिरोधी प्रजातियों का ही प्रयोग करना चाहिए। यदि किसी बीज गन्ने के कटे हुए सिरे अथवा गांठों पर लालिमा दिखे, तो ऐसे सैट का प्रयोग नहीं करना चाहिए। स्वस्थ बीज गन्ना की बुआई करनी चाहिए। इसका बीज आर्द्र गर्म

गन्ना

वायु उपचार (54 डिग्री सेल्यियस ताप पर 2.5 घण्टों तक 99 प्रतिशत आर्द्रता पर) विधि से पूर्व उपचारित किया जाना चाहिए। पौधशालाओं के लिए खेत के चयन में समुचित जल निकास की व्यवस्था सुनिश्चित कर लेनी चाहिए, ताकि वर्षा ऋतु में पानी का जमाव न हो सके। ट्राइकोडर्मा 2.5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से 75 कि.ग्रा. गोबर की खाद में मिलाकर प्रयोग करना चाहिए। स्यूडोमोनास फ्लोरिसेन्स 2.5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से 100 कि.ग्रा. गोबर की खाद में मिलाकर प्रयोग करना चाहिए।

- **गुरुदासपुर बेधक:** कीट का प्रकोप जुलाई से अक्टूबर तक रहता है। सूंडी ऊपर से दूसरी या तीसरी पोरी में प्रवेश कर अन्दर से गन्ने को खोखला कर देती है। इस कीट की रोकथाम के लिए गन्ने की सूखी पत्तियों को काटकर अलग कर देना चाहिए। एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन के अन्तर्गत ट्राइकोग्रामा चिलोनिस के 10 कार्ड/हैक्टर की दर से 15 दिनों के अन्तराल पर सायंकाल प्रयोग करना चाहिए। प्रभावी नियंत्रण हेतु जल निकास की व्यवस्था करें तथा मोनोक्रोटोफॉस 36 ईसी एस.एल. 2.0 लीटर प्रति हैक्टर या क्लोरोपायरीफॉस 20 ईसी 1-1.5 लीटर प्रति हैक्टर 600-800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। कार्बोफ्यूरान 3 प्रतिशत सीजी 30 कि.ग्रा. या फोरेट 10 प्रतिशत सीजी 30 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करना चाहिए।
- **जड़बेधक कीट:** इस कीट की सूंडी का प्रकोप छोटे-बड़े दोनों ही पौधों पर पाया जाता है। सूंडी जमीन से लगे हुए गन्ने के भाग में छिद्र बनाकर घुस जाती है। डेड हार्ट बनाती है इन मृतसारों से कोई दुर्गन्ध नहीं निकलती है तथा इसे आसानी से निकाला नहीं जा सकता है। इस कीट की रोकथाम के लिए कीट के अण्ड समूहों को इकट्ठा करके तथा प्रभावित तनों को जमीन से काटकर नष्ट कर देना चाहिए। तलहटी वाले खेतों में पेड़ी की फसल नहीं लेनी चाहिए तथा इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एस.एल. 350 मि.ली. अथवा क्लोरोपायरीफॉस 20 प्रतिशत ईसी 1.5 लीटर प्रति हैक्टर अथवा फेनवलरेट 0.4 प्रतिशत धूल 25 कि.ग्रा. की दर से 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

वानिकी

- सफेदा के पेड़ अगस्त में खेतों, नालियों और सड़कों के किनारे 10 फीट दूरी पर तथा सघन पौध रोपण में 10×10 फीट

वानिकी

- जैट्रोफा नमी वाली भूमि तथा दिसम्बर-जनवरी को छोड़कर किसी भी जगह किसी भी समय लगाया जा सकता है। इसके वृक्षों की आयु 47-70 वर्ष होती है तथा पहले वर्ष में ही फसल दे देती है। इससे 27,000 रुपये प्रति एकड़ पैदावार मिलती है, जोकि फसल की आयु के हिसाब से बढ़ती जाती है। पौधे को 12×12 फीट की दूरी पर या मेड़ों पर भी लगाया जा सकता है। जैट्रोफा के खेत में अदरक, हल्दी, चना, मटर, मसूर आदि की मिश्रित खेती भी हो सकती है। सफेदा, शीशम, नीम, यूकेलिप्टिस तथा बबूल अगस्त में बंजर भूमि में लगा सकते हैं। इनकी लकड़ी ईंधन, उद्योगों का कच्चा माल, बिजली के खम्बे, फर्नीचर बनाने के काम आती है तथा काफी लाभदायक है।
- शीशम तथा बबूल को 17×17 फीट तथा नीम को 27×27 फीट पर लगायें। पेड़ लगाने के 3 माह बाद 20 ग्राम यूरिया दूसरे वर्ष बाद 70 ग्राम तथा 3,4,6 तथा 7 वर्षों बाद 100 ग्राम यूरिया प्रति पेड़ पानी के साथ दें। नर्सरी में तैयार पौध कृषि विभाग या कृषि विश्वविद्यालयों से समय पर संपर्क करके प्राप्त कर सकते हैं।

सब्जी वाली फसलें

- भिंडी की फसल में बुआई के 50 दिनों बाद 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (87 कि.ग्रा. यूरिया) प्रति हैक्टर की दर से दूसरी टॉप ड्रेसिंग करें एवं भिंडी की कटाई सही समय पर करें। सामान्यत: फूल आने के 8-10 दिनों के भीतर भिंडी की फली की तुड़ाई अवश्य करें। फलीछेदक कीटों के प्रकोप से बचने के लिए मैलाथियान (50 ई.सी.) 500-600 एम.एल. मात्रा का छिड़काव करते हैं। विशेष ध्यान रखें कि कीटनाशी का प्रयोग करने के 7-8 दिनों तक फली की तुड़ाई न करें।
- भिंडी, बैंगन व मिर्च की फसलों में निराई-गुड़ाई व जल निकास तथा रोग एवं कीटों से रोकथाम की व्यवस्था करें। बैंगन में रोपाई के 30 दिनों बाद 50 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, मिर्च में 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन तथा फूलगोभी में 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन की टॉप ड्रेसिंग प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें। इस समय बैंगन में कोक्सीनेल्ला बीटल का प्रकोप होता है। इसकी रोकथाम के लिए क्विनालफॉस 2.0 एम.एल. प्रति लीटर की दर से छिड़काव करना चाहिए। इसके साथ ही शूट और फ्रूट बोरर के लिए कार्बोरिल 2.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से प्रयोग करना चाहिए।
- कददूवर्गीय सब्जियों में प्रति हैक्टर 25 कि.ग्रा. नाइट्रोजन या 54 कि.ग्रा. यूरिया को दो भागों में बांटकर बुआई के 30 एवं 45 दिनों बाद टॉप ड्रेसिंग करें। कददूवर्गीय सब्जियों में मचान बनाकर उस पर बेल चढ़ाने से पैदावार में वृद्धि होगी और फल स्वस्थ होंगे। सभी सब्जियों में उचित जल निकास की व्यवस्था करें। पूसा संकर-3 लौकी की बुआई अगस्त तक की जा सकती है। इस किस्म में लौकी की तुड़ाई 50-55 दिनों में शुरू हो जाती है।

भिंडी

चारा फसलें

- मक्का, ज्वार, बाजरा, लोबिया व ग्वार आदि चारे वाली फसलों में वर्षा न होने या सूखे की स्थिति होने पर हल्की सिंचाई अवश्य करनी चाहिए। अगेती बोयी गयी चारे वाली फसलों की कटाई समय से करते रहें।
- समय से बोई गयी अधिक उत्पादन वाली बाजरा प्रजातियों में 30-40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन का छिड़काव करें। चारे के लिए बोई गयी मक्का, ज्वार, बाजरा, लोबिया आदि की कटाई करें। बाजरा एवं ज्वार की दो कटाई वाली प्रजातियों में 30-40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। छिड़काव के समय मृदा में पर्याप्त नमी होनी चाहिए।

- यदि पुराने चरागाह में चारा की अच्छी बढ़त हो गयी हो, तो हरे चारे की एक कटान अगस्त के अंत में कर लें। घास की रोपाई करें। विगत वर्ष लगाए गये चरागाह में मरे हुए पौध की जगह नई घास की पौध की रोपाई करें। बहुवर्षीय घासों की रोपाई यदि जुलाई में पूर्ण न हो पाई हो, तो शीघ्र पूर्ण करें। गिनी, नेपियर, सिटेरिया, बहुवर्षीय स्थापित चारा घासों की कटाई 40-45 दिनों के अंतर पर करते रहें तथा कम अंतराल पर पानी और यथा आवश्यकता उर्वरक, गोबर की सड़ी खाद या कम्पोस्ट डालते रहें।

परवल

परवल लगाने के लिए 15 अगस्त के आसपास का समय सर्वोत्तम रहता है। परवल की रोपाई 2×2 मीटर की दूरी पर 50 सें.मी. व्यास के 30 सें.मी. गहरे गड्ढे खोदकर उसमें आधा भाग मिट्टी एक चौथाई भाग सड़ी गोबर की खाद व एक चौथाई बालू, 100 ग्राम नीम की खली, 5 ग्राम फ्यूराडॉन मिलाकर जमीन से 15 सें.मी. ऊंचाई तक भर देना चाहिए। परन्तु मचान बनाकर परवल लगाने की दूरी 1.5×1.5 मीटर रखते हैं।

लौकी

- खीरा तथा अन्य सब्जियों में फलछेदक कीटों का हमला होने का खतरा बना रहता है। किसान भाइयों को दवाइयों का छिड़काव समय-समय पर करते रहना चाहिए। परंतु दवाई छिड़कने के एक सप्ताह बाद ही फल तोड़ें तथा पानी

खीरा

से सब्जी अच्छी तरह धोयें। इस फसल में 1/2 बोरा यूरिया छिड़कें, इससे फल अच्छे लगेंगे।

- मिर्च की फसल में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई, सिंचाई व जल निकास की उचित व्यवस्था करें। पौधों की अच्छी वृद्धि नहीं है, तो 50 कि.ग्रा. यूरिया खड़ी फसल में डालें तथा कीटों तथा रोगों से बचाने के लिये 0.2 प्रतिशत इंडोफिल-45 व 0.1 प्रतिशत मेटासिस्टाक्स नामक दवा का घोल बनाकर एक छिड़काव अवश्य करें।
- अदरक की फसल में 25 कि.ग्रा. नाइट्रोजन या 54 कि.ग्रा. यूरिया की दूसरी टॉप ड्रेसिंग बुआई के 60-70 दिनों बाद करें। हल्दी की फसल में प्रति हैक्टर 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन या 87 कि.ग्रा. यूरिया की दूसरी टॉप ड्रेसिंग बुआई के 60-70 दिनों बाद करें।
- बंदगोभी की पूसा अगेती, गोल्डन एकड़ की बुआई इस माह में की जा सकती है। अच्छी प्रकार तैयार कर खेत में 20-25 टन सड़ी हुई गोबर की खाद और 120-60-60 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश का

बंदगोभी

प्रयोग करना चाहिए। बंदगोभी की नर्सरी में डेम्पिंग ऑफ से बचाव के लिए ब्लाइटॉक्स का 205 एम.एल. प्रति लीटर पानी में मिलाकर प्रयोग करना चाहिए।

- खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई से पहले बेसालीन 2.5 लीटर या स्टॉम्प 3.3 लीटर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव कर हल्की सिंचाई करें।
- अगेती फसल में सिंचाई रोपाई के तुरन्त बाद तथा उसके बाद साप्ताहिक अन्तराल पर व मध्यम व पछेती फसल में 10-15 दिनों के अंतराल पर करें।
- गाजर की पूसा मेघाली, पूसा यमदाग्नि व पूसा वृष्टि एवं मूली की पूसा चेतकी व पूसा देसी किस्मों की बुआई अगस्त तक की जा सकती है, जो कि 40-50 दिनों में तैयार हो जाती है।
- खरीफ मौसम में टमाटर की पूसा सदाबहार, पूसा रोहिणी, पूसा-120, पूसा गौरव, पी-एच-2 और पी-एच-8

गाजर

बेबीकॉर्न

की रोपाई इस माह कर सकते हैं।

- बेबीकॉर्न की अगस्त में बुआई करने से अच्छी गुणवत्ता वाली बेबीकॉर्न प्राप्त होती है।
- शिमला मिर्च, टमाटर एवं गोभी की मध्यवर्गीय प्रजातियों की पौधशाला में बिजाई पूरे माह साप्ताहिक अन्तराल पर कर सकते हैं।

शिमला मिर्च

- हरे प्याज की रोपाई से पूर्व 20-25 टन सड़ी गोबर की खाद या 8 टन नाडेप

टमाटर

कम्पोस्ट खेत में मिला दें तथा अन्तिम जुताई के बाद 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस और 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की दर से खेत में अच्छी तरह मिला दें।

- मूली की फसल में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई की व्यवस्था करें। कीटों से बचाव के लिये 0.15 प्रतिशत मेटासिस्टाक्स नामक दवा का घोल बनाकर एक छिड़काव अवश्य करें।

मूली

- पालक की पूर्व में बोई गई फसल में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें। तैयार पत्तियों की कटाई करें व गठियां बनाकर बाजार भेजें।

पालक

- ग्वार की तैयार फलियों की तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। कीटों से बचाव के लिये 0.2 प्रतिशत मेटासिस्टाक्स नामक दवा का घोल बनाकर एक छिड़काव अवश्य करें।
- हल्दी की फसल में स्केल कीट के नियंत्रण हेतु नीम के बीज का घोल (5 प्रतिशत) या नीम निर्मित कीटनाशी (निम्बेसिडीन, अचूक, निमेरिन) का छिड़काव (2.0 मि.ली./लीटर पानी) करने से पत्र लपेटक, भृंग तथा स्केल कीट को नियंत्रित किया जा सकता है।

बागवानी फसलें

- आम के बागों से फलों की तुड़ाई के बाद पेड़ों की रोग वाली और फालतू शाखाओं की कटाई-छंटाई करें। रोगी व सूखी टहनियों को काटकर जला दें। नये पेड़ों में 500 ग्राम नाइट्रोजन प्रति पेड़ की दर से प्रयोग करें। आम में शल्क कीट तथा शाखा गांठ कीट की रोकथाम के लिए मिथाइल पैराथियान 1.0 मि.ली. या डाई मेथोएट 1.5 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी में से किसी एक दवा का 15 दिनों के अन्तराल पर बदलकर दो बार छिड़काव करें। तराई क्षेत्रों में आम के पौधों पर गांठ बनाने वाले कीट गॉलमेज की रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफॉस 0.5 प्रतिशत या डाइमेथेएट 0.06 प्रतिशत दवा का छिड़काव करें।
- आम एवं लीची में रेंडरस्ट और सूटी मोल्ड की रोकथाम के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का 30 ग्राम प्रति लीटर या ब्लाइटॉक्स 0.3 प्रतिशत (3 ग्राम दवा की प्रति लीटर पानी में घोलकर) छिड़काव पेड़ों पर करें। लीची की फसल में लीफ माइनर की रोकथाम के लिए मेटासिस्टॉक्स 2.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी का प्रयोग करें। लीची की छाल को खाने वाले कीटों की रोकथाम के लिए इनके द्वारा बनाए गए छिद्रों में क्लोरोफार्म/पेट्रोल या केरोसिन को रूई की मदद से उपचार कर नष्ट करना चाहिए।
- तराई क्षेत्रों में आम के पौधों पर गांठ बनाने वाले कीटों (गॉल मेकर) की रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफॉस (0.5 प्रतिशत) या डाइमेथोएट (0.06 प्रतिशत) दवा का छिड़काव करें।
- आम के पौधों पर लाल रतुआ एवं श्यामव्रण (एन्थ्रेक्नोज) रोग होने पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0.3 प्रतिशत) दवा का छिड़काव करें।
- आम सिल्ली कीट की रोकथाम के लिए 5-10 अगस्त के बीच क्विनालफॉस (0.04 प्रतिशत) का 10-15 दिनों के अंतराल पर 3 छिड़काव करें। कीट प्रभावित टहनियों की नुकीली गांठों की छंटाई करें।
- आंवला में एक वर्ष के पौधे के लिए प्रति पेड़ 10 कि.ग्रा. गोबर या कम्पोस्ट खाद एवं 50 ग्राम नाइट्रोजन व 35 ग्राम पोटाश, जो क्रमशः बढ़कर 10 वर्ष या उससे ऊपर के पौधों में 100 कि.ग्रा. गोबर या कम्पोस्ट खाद एवं 500 ग्राम नाइट्रोजन व 350 ग्राम पोटाश इस माह में प्रयोग करें।
- आंवला के पौधों में नीले फफूंद रोग को प्रतिबंधित करने के लिए फलों को बोरेक्स या नमक से उपचारित करने से रोग को रोका जा सकता है। फलों को कार्बेन्डाजिम या थायोफनेट मिथाइल 0.1 प्रतिशत से उपचारित करके भी रोग नियंत्रित किया जा सकता है।
- बेर में मिलीबग कीट की रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफॉस (36 ई.सी.) 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- लीची छिलका खाने वाले पिल्लू (बार्क इटिंग कैटरपिलर) की रोकथाम के लिए

फूलगोभी

अगस्त में फूलगोभी की मध्यम अगेती किस्में जैसे-पूसा संकर-2, पूसा मेघना, पूसा शरद एवं मध्यम पछेती फूलगोभी की किस्में जैसे-पूसा पौषजा, पूसा शुक्ति प्रजातियों की बुआई के लिए बीज की मात्रा 350-400 ग्राम/हैक्टर होनी चाहिए। बुआई का समय जुलाई अंत से अगस्त प्रारंभ हो व अगस्त अंत से सितम्बर प्रारम्भ तक नर्सरी तैयार करें। नर्सरी तैयार करने के लिए मृदा को कवकनाशी जैसे फार्मेल्डीहाइड की 25-30 मि.ली. मात्रा एक लीटर पानी में मिलाकर नर्सरी वाले क्षेत्र में छिड़कना चाहिए और नर्सरी को पॉलीथीन शीट से ढक दें। इसके लगभग 15 दिनों बाद बुआई करें। फूलगोभी की प्रजातियों की रोपाई के लिए प्रति हैक्टर 20-25 टन सड़ी गोबर की खाद या 8 टन नाडेप कम्पोस्ट खेत की तैयारी के समय तथा 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस और 40 कि.ग्रा. पोटाश अन्तिम जुताई या रोपाई से पूर्व खेत में अच्छी तरह मिला दें। फूलगोभी की फसल में डैम्पिंग ऑफ के नियंत्रण के लिए एप्रॉन एस.डी. 35 या थीरम 2 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार तथा एन्थ्रेक्नोज के लिये डायथेन एम-45 या बाविस्टीन 2 ग्राम/लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

आम

अमरूद

अमरूद के पौधों का रोपण इस माह में 5×5 मीटर की दूरी पर करना चाहिए। पौध लगाते समय प्रति गड्ढा 25-30 कि.ग्रा. गोबर की खाद डालनी चाहिए। इसके लिए प्रथम वर्ष में 260 ग्राम यूरिया, 375 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट और 500 ग्राम पोटेशियम सल्फेट प्रति पौधा डालना चाहिए। इसके बाद आयु के हिसाब से उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। अमरूद में वर्षा के समय की फसल से पैदावार तो अधिक मिलती है किन्तु गुणवत्ता खराब होती है। इसलिए इस मौसम में फल न लेकर शरद ऋतु में लेने के लिए आवश्यक कृषि कार्य करने चाहिए। अमरूद के पौधों में जस्ता तत्व की कमी होने से पत्तियों का पीला पड़ना, छोटा होना तथा पौधों की बढ़वार कम हो जाने के लक्षण मिलते हैं। इसके नियंत्रण के लिए 2 प्रतिशत जिंक सल्फेट का छिड़काव अथवा 300 ग्राम जिंक सल्फेट पौधों की जड़ों में देना लाभप्रद पाया गया है। मानसून के समय बागानों में जल निकास का उचित प्रबंध होना चाहिए। इसके साथ ही लगातार बागों में निगरानी रखें और रोग आदि के लक्षण दिखने पर शीघ्र उपचार करें।

कटहल

कटहल के पौधे में तनाबेधक कीट के नियंत्रण हेतु छिद्र को किसी पतले तार से साफ करके नुवाक्रॉन का घोल (10 मि.ली./लीटर) अथवा पेट्रोल या केरोसिन तेल की चार-पांच बूंदें रुई में डालकर गीली चिकनी मिट्टी से बंद कर दें। इस प्रकार वाष्पीकृत गंध के प्रभाव से पिल्लू मर जाते हैं एवं तने में बने छिद्र धीरे-धीरे भर जाते हैं। छिद्रों में पेट्रोल या नुवान या फार्मलीन से भीगी रूई ठूंसकर चिकनी मिट्टी से बंद कर देना चाहिए। इन कीटों से बचाव के लिए बगीचे को साफ रखना श्रेयस्कर पाया गया है।

- केले में प्रति पौधा 100 ग्राम पोटाश एवं 55 ग्राम यूरिया पौधे से 50 सें.मी. दूर गोलाई में प्रयोग कर हल्की गुड़ाई कर मृदा में अच्छी तरह मिला दें। केले के पौधों में पनामा विल्ट की रोकथाम के लिए बाविस्टीन के 1.5 मि.ग्रा. प्रति लीटर पानी के घोल से पौधों के चारों तरफ की मिट्टी को 20 दिनों के अंतराल से दो बार छिड़काव कर देना चाहिए।
- पपीता के पौधों पर फूल आने के समय 2 मि.ली. सूक्ष्म तत्वों को एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। पनामा विल्ट की रोकथाम के लिए बाविस्टीन के 1.5 मि. ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल से पौधों की चारों तरफ की मिट्टी को 20 दिनों के अंतराल से दो बार छिड़काव कर देना चाहिए।
- पपीता के पौधों पर कॉलर रॉट के प्रकोप से पौधे जमीन की सतह से ठीक ऊपर गल कर गिर जाते हैं। इसके नियंत्रण के लिए पौधशाला से पौधों को रिडोमिल (2 ग्राम/लीटर) दवा का छिड़काव करें। खेत में जलभराव न होने दें और जरूरत पड़ने पर खड़ी फसल में भी रिडोमिल (2 ग्राम/लीटर) के घोल से जल सिंचन करें।
- नीबू में सिट्रस कैंकर रोग, जिसमे रोग के लक्षण पत्तियों से प्रारम्भ होकर बाद में टहनियों, कांटों और फलों पर आ जाते हैं, की रोकथाम के लिए गिरी हुई पत्तियों को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। रोगयुक्त टहनियों की काट-छांट कर बोर्डो मिश्रण (5:5:50) का छिड़काव करें। ब्लाइटॉक्स 0.3 प्रतिशत (3 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर) का छिड़काव पेड़ पर करें। नीबूवर्गीय फलों में रस चूसने वाले कीट आने पर मैलाथियॉन 2 मि.ली./लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- नीबू के पौधे में नील फफूंद रोग को प्रतिबंधित करने के लिए फलों को बोरेक्स या नमक से उपचारित करने से रोग को रोका जा सकता है। फलों को कार्बेन्डाजिम या थायोफनेट मिथाइल 0.1 प्रतिशत से उपचारित करके भी रोग नियंत्रित किया जा सकता है।
- नीबू, बेर, केला, जामुन, पपीता, आम, अमरूद, कटहल, लीची, आंवला के नये बाग लगाने का काम इस महीने पूरा कर लें और अपने क्षेत्र को ध्यान में रखकर ही अच्छी किस्मों के पौधे लगायें। इस माह में नीबू और लीची में गूटी बांधने का उपयुक्त समय होता है। ■

पुष्प व सुगंध वाले पौधे

- रजनीगंधा और ग्लोडियोलस में आवश्यकतानुसार सिंचाई, निराई-गुड़ाई करें। पोषक तत्वों के मिश्रण का छिड़काव करें एवं रजनीगंधा के स्पाइक की समय पर कटाई करें।

रजनीगंधा

- गुलाब की नर्सरी स्टॉक की क्यारियों में बदलाव करें। गुलाब की फसल में जल निकास की व्यवस्था करें तथा आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व रेड स्केल कीट का नियंत्रण करें।

गुलाब

- फूलों के खेतों में वर्षा का पानी निकालने का इंतजाम करें। फूलों में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई कर खरपतवारों को समय पर निकालते रहें।
- ग्रीष्म ऋतु के फूलों का समय पूरा हो गया है। इन्हें धीरे-धीरे निकाल दें तथा क्यारियों की खुदाई कर दें। मिट्टी को रोगरहित बनाने के लिए दवाइयां डालें। सर्दियों के फूलों की बीजाई की तैयारी शुरू कर दें।